ISSN 2348-3857

पं. जे.एल. नेहरू के आर्थिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

डॉ. मृदुला शर्मा

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

पं. नेहरू ने युगबोध बनकर आधी शताब्दी से अधिक समय तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसके निर्माण को दिशा प्रदान की अर्थात् सही अर्थो में बात की जाये तो वे मानवता के सच्चे हितैषी थे जो न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके प्रतिनिधि कहलाये। आज उनका चिंतन आकांक्षाएं, उपलब्धियां, मान्यताएं देश के लिए समर्पित इतिहास है। नेहरू के राजनैतिक व सामाजिक चिंतन में उन्होंने भारत की आर्थिक प्रगति के सन्दर्भ में पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण की बात की गई। अर्थात् आर्थिक नियोजन की रूपरेखा से आर्थिक समस्याओं का समाधान संभव है इसे लिए उन्होंने पूर्ण सोवियत संघ (रूस) साम्यवादी मॉडल भारतीय परिप्रेक्ष्य में बदलकर लोकतांत्रिक समाजवाद में बदल दिया ताकि समाज के सभी वर्गो का उत्थान नियोजन के अन्तर्गत किया जा सके। इसी सन्दर्भ में विकास के लिए नेहरू द्वारा मिश्रित अर्थव्यवस्था का समाजवादी मॉडल की अवधारणा का प्रतिपादन किया गया। नेहरू ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि- ''सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका, विशेष रूप से, महत्वपूर्ण एवं बुनियादी उद्योगों की स्थापना में खास होनी चाहिए, निजी क्षेत्र को भी अपना कार्य निरन्तर जारी रखना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में उत्पादन और रोजगार में यथेष्ट वृद्धि करने के लिए इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।'' नेहरू बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य के अन्तर्गत भारतीय अर्थव्यवस्था की गतिशीलता और लोचशीलता को सुनिश्चित करने हेतु न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय रहे। भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम की शुरूआत करने का लक्ष्य प्रतिपादित किया और बाद में इसे एक सामाजिक आंदोलन में बदल दिया।

संकेताक्षर : *मिश्रित अर्थव्यवस्था, सामुदायिक विकास कार्यक्रम, औद्योगीकरण*

पं. नेहरू ने युगबोध बनकर आधी शताब्दी से अधिक समय तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसके निर्माण को दिशा प्रदान की अर्थात् सही अर्थो में बात की जाये तो वे मानवता के सच्चे हितैषी थे जो न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके प्रतिनिधि कहलाये। आज उनका चिंतन आकांक्षाएं, उपलब्धियां, मान्यताएं देश के लिए समर्पित इतिहास है। नेहरू ने जनतंत्र को निकट से समझा तथा उसके विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे। इसलिए महात्मा गांधी द्वारा उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। ऐसा प्रतीत होता है कि गांधी एक ऐसे ही नेता की प्रतीक्षा में थे। गांधी के निकट सम्पर्क में रहने तथा शताब्दी के तीसरे दशक में उत्तर प्रदेश के किसानों में विचरण करने के फलस्वरूप जनता की भावनाओं व आंकाक्षाओं को समझना सीख लिया।[1] हालांकि नेहरू उनके सभी विचारों से पूर्णत: सहमत नहीं थे फिर भी वह उनके अनुयायी बन गये। नेहरू के मन में गांधी के प्रति सदैव भावनात्मक अनुराग बना रहा।[2] नेहरू ने गांधी को 23 जनवरी, 1928 को लिखे पत्र में कहा कि ''वह राजनीति में गांधी के बालक के समान है, जो शायद जिद्दी और सनकी है।'' पं. नेहरू ने तत्कालीन समय के प्रवाह को अत्यधिक गहनता से समझा और परिस्थिति जन्य समस्याओं को सुलझाने का एक विशिष्ट गुण पैदा किया एक स्फटिक मणि की तरह पवित्र बने रहे जिनकी सहनशीलता, अंहिसात्मक सहिष्णुता के कारण राष्ट्र उनके हाथों में सुरक्षित रहा। उन्हें इस बात का अहसास नहीं है कि भारत के इतिहास में उनका क्या स्थान है। ये ज्ञापन आंशिक रूप से ही सरकार को संबोधित किए है। वास्तव में ये लोगों को ही सम्बोधित किए जाते है। ताकि वे इन विषयों पर सोच सके कि इस कार्य को बिना किसी परिणाम की आशा के अनेक वर्षो तक निरन्तर किया जाना चाहिए क्योंकि इस प्रकार की राजनीति इस देश में पूर्णत: नई है।

नेहरू न केवल भारत माता के अनोखे जवाहर थे अपितु समस्त मानवता के श्रेष्ठ पुरूष थे उन्होंने शांति, समानता, स्वतंत्रता तथा उन सब में मानव की गरिमा की रक्षा को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए समकालीन राजनेताओं से कहीं अधिक कार्य किया।[3] संसार को युद्ध की विभीषिका से बचाने तथा मानवता की रक्षा हेतु पंचशील, गुट निरपेक्षता, शांति पूर्ण सहअस्तित्व तथा परस्पर लाभ की नीतियों का प्रतिपादन किया। नेहरू का जन्म 14 नवम्बर, 1889 को प्रयाग में हुआ इनके पूर्वजों को सम्राट फरूखसियर से जागीर प्राप्त हुई जो कि नहर के किनारे थी इसलिए आगे चलकर ये नेहरू उप नाम से जाने गये। अपनी कठोर परिश्रमवादी नीतियों से शीघ्र ही वकालत में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया लेकिन देश में उत्पन्न परिस्थितियों के कारण इनका मन वकालत में नहीं लगा और महात्मा गांधी के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो गये। न केवल पं. नेहरू बल्कि उनके पिता पं. मोतीलाल नेहरू ने भी सम्पूर्ण भारत में घूम घूम कर राष्ट्रीय आन्दोलन की नींव तैयार की। अपने वैमव विलासता पूर्ण जीवन को राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

पं. नेहरू के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, मानवीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय विचारों की पृष्ठभूमि राष्ट्रीय आन्दोलन से ही तैयार होने लगी थी। 1927 में भारतीय राष्ट्रीय सभा के प्रतिनिधि के रूप में जिनेवा अधिवेशन में भाग लिया । 1928 में साइमन कमीशन का विरोध किया, 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता की ओर पूर्ण स्वराज्य का नारा उद्घोषित किया। जो यह दर्शाता है कि वैभव और विलासिता में पले हुए जवाहर धीरे-धीरे से लोहे की तरह तप कर निखर रहे थे। पूर्वोक्त 1928 की पं. मोती लाल की रिर्पोट की आंशिक औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग के विपरीत फरवरी 1931 में पिता तथा 25 फरवरी 1936 में पत्नी कमला नेहरू की मृत्यु के बाद सम्पूर्ण समय भारत माता की सेवा में लगा दिया। अनेक बार आन्दोलन के समय जेल की यात्रा की वहां अपने समय का सदुपयोग करते हुए प्रसिद्ध पुस्तकों की रचना की जो आज राष्ट्र के लिए मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाह कर रही है जैसे- ''विश्व इतिहास की झलक', आत्मकथा'', भारत एक खोज प्रमुख है।

1936 का कांग्रेस फैजपुर अधिवेशन, 1939 में चीन यात्रा, 1940 गांधी के व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन का नेतृत्व एक कुशल परिपक्व सत्याग्रही की तरह किया,[4] 1942 के क्रिप्स मिशन से वार्तालाप, 1945 वेवल की शिमला बैठक, आजाद हिंद फौज के सैनिकों की पैरवी संविधान निर्माण में प्रस्तावना की रचना हेतु उद्देश्य प्रस्ताव की रूपरेखा तैयार की इसी क्रम में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बनने का गौरव प्राप्त किया। विभाजन से उत्पन्न विभीषिका और चुनौतियों का दृढ़तापूर्वक निस्तारण किया। मन में उत्पन साम्प्रदायिक विभाजन के संताप को राष्ट्र सेवा में लगाकर मानवता की सेवा का व्रत पूरा किया।

पं. नेहरू को हम कोई मौलिक राजनीतिक चिन्तक अथवा सैद्धान्तिक राजनेता होने का श्रेय नहीं दे सकते। उन्होंने मानव-जीवन की व्यवहारिक समस्याओं पर अधिक मनन किया और सम्पूर्ण जीवन उनके समाधान में लगा दिया। उन्होंने भारत में एक समाजवादी समाज की स्थापना करनी चाही ताकि सभी भारतीयों को आर्थिक के साथ राजनैतिक स्वतंत्रता की ओर अग्रसर कर सके और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त हो। जैसा कि नेहरू ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति में कहा ''अंग्रजों ने जिस आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना की थी उसके स्थान पर कैसी व्यवस्था होनी चाहिए इसकी निश्चित और स्पष्ट छवि को तैयार करना अपने आप में समस्या है। बिना आर्थिक विकास के प्रतिमान लागू किये भारत को आत्मनिर्भर नहीं बनाया जा सकता है।

आर्थिक विचारधारा और नेहरू के सापेक्ष अध्ययन के अन्तर्गत अन्तत जो रूप सामने निकल कर आया वो लोकतांत्रिक समाजवाद कहा जाता है। वह स्वयं मानते हैं कि 1920 तक मैं खेत और कारखानों में मजदूरों की दशा से सर्वथा अनभिज्ञ था और मेरा सम्पूर्ण दृष्टिकोण पूंजीवादी था लेकिन धीरे-धीरे भारतीय सभ्यता और संस्कृति के परिवेश में भारतीय समाज के अध्ययन के अन्तर्गत उनका दृष्टिकोण बदला और मन में इस विश्वास ने जन्म लिया कि सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता के बिना स्वतंत्रता अधूरी है। 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण में कहाकि ''मेरा राजाओं और नरेशों में विश्वास नहीं है और न ही मैं इस व्यवस्था में विश्वास करता हूँ जो कि उद्योग के उन आधुनिक राजाओं को जन्म देती है, जिनका कि मनुष्य के जीवन तथा भाग्य पर पुराने जमाने के राजाओं से भी कहीं अधिक बड़ा अधिकार है और जिनके ढंग वैसे ही लुटेरेपन के है। जैसे कि पुराने सामन्तों के हुआ करते थे।[5]

दी पोलिटिकल फिलॉसफी ऑफ जवाहरलाल नेहरू (एम.एन. दास) में नेहरू द्वारा भारत की आर्थिक प्रगति के सन्दर्भ में पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण की बात की गई। अर्थात् आर्थिक नियोजन की रूपरेखा से आर्थिक समस्याओं का समाधान संभव है इसलिए उन्होंने पूर्ण सोवियत संघ (रूस) साम्यवादी मॉडल भारतीय परिप्रेक्ष्य में बदलकर लोकतांत्रिक समाजवाद में बदल

दिया ताकि समाज के सभी वर्गो का उत्थान नियोजन के अन्तर्गत किया जा सके। इससे गरीब और अमीर के मध्य उत्पन आर्थिक और सामाजिक विषमता की गहराई को कम किया जा सके। नेहरू ने अपनी 'आत्मकथा' में स्वीकार किया कि साम्यवादी दर्शन ने उन्हें सान्त्वना दी थी। सामयवाद अतीत की व्याख्या करने का प्रयत्न करता है और भविष्य के लिए आशा प्रदान करता है।[6] नेहरू ने अपनी पुस्तक सोवियत रशिया में जिसकी रचना 1928 में की थी कहा कि उन्होंने पूर्व सोवियत संघ (रूस) के सम्बंध में निश्चयात्मक रवैया नहीं अपनाया लेकिन फिर भी इस देश में जो कुछ हो चुका था और हो रहा था उसको मानव शक्ति की तात्विक और नाटकीय अभिव्यक्ति मानते थे।[7]

वैचारिक दृष्टि से समाजवाद को नियोजन का लक्ष्य कांग्रेस द्वारा 1955 में आवड़ी अधिवेशन में समाज का समाजवादी पद्धति के विकास प्रस्ताव के पास होने के बाद ही माना जाने लगा लेकिन पंचवर्षीय योजनाओं का श्रीगणेश 1951 में ही आरम्भ कर दिया जिसमें राष्ट्रीय आय में 11 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान रखा गया लेकिन 18 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त हुई तथा खाद्यान्न उत्पादन में विदेशी निर्भरता को काफी कम किया गया। इस सन्दर्भ में नेहरू ने कहा कि ''मेरे दिमाग में जो तस्वीर है, वह निश्चित रूप से और पूर्ण रूप से इस समाज की समाजवादी तस्वीर है। मैं इस शब्द का प्रयोग हठधर्मिता के रूप में बिल्कुल नहीं कर रहा हूँ। मेरा यह मतलब है कि उत्पादन के साधनों पर कुल मिलाकर समाज के हित के लिए समाज का ही अधिकार और नियंत्रण होना चाहिए''। इस विचारधारा का प्रभाव राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों में देखा जा सकता है। जहां सरकार को अपनी नीति निर्माण में उन सभी तत्वों को ध्यान में रखना होगा जो समाजवाद को बढावा देते है।[8]

इसी सन्दर्भ में विकास के लिए नेहरू द्वारा मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाकर लोकतांत्रिक मूल्यों में गहरी निष्ठा व्यक्त की और कहा कि लोकतांत्रिक समाजवाद ही एक मात्र तत्व है जो मिश्रित अर्थव्यवस्था को गति प्रदान कर सकता है। अर्थात् समाज के आर्थिक साधनों का प्रयोग इस तरह किया जाए कि वे किसी एक वर्ग या अमीर लोगों के हाथों में केन्द्रित नहीं हो जाए इसी के साथ निजी क्षेत्र और विदेशी पूंजी के महत्व को भी समझा। नेहरू का उद्देश्य तो जनसाधारण की दरिद्रता दूर करने बेरोजगारी दूर करने एवं जीवन स्तर ऊँचा उठाने से था। इसके लिए अधिक से अधिक उत्पादन की आवश्यकता थी अत: राज्य के वित्तीय साधनों एवं प्रशिक्षित और अनुभवी व्यक्तियों को ध्यान में रखकर नेहरू ने मिश्रित अर्थ-व्यवस्था की धारणा प्रतिपादित की साथ ही स्पष्ट किया कि निजी क्षेत्र भारत के आर्थिक विकास में एक लम्बे समय तक अपनी भूमिका निभायेगा। इस पद्धति के विकास के साथ सार्वजनिक क्षेत्र भी अधिक विस्तृत हो जायेगा। निजी क्षेत्र पर व्यक्तिगत स्वामित्व बना रहा, वहीं भारत की एकता अखण्डता, प्रतिरक्षा, सैन्य, कोयला, खनिज पदार्थ, अणुशक्ति, रेलवे, लोहा-इस्पात आदि सरकारी नियंत्रण में रहे।[9] समाज की समाजवादी पद्धति के अन्तर्गत निजी क्षेत्र की भूमिका सामाजिक हित के उद्देश्य से निर्धारित की गई अर्थात् इसमें जन सामान्य के कल्याण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया। साथ ही निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में स्वस्थ प्रतियोगिता होने से इनके विकास को निरन्तर बढ़ावा मिला तथा गांधी द्वारा प्रतिपादित कुटीर और लघु उद्योगों को सरंक्षण प्रदान किया जा सका। नेहरू द्वारा दूसरी पंचवर्षीय योजना में प्रस्तुत आर्थिक नीति में एक प्रस्ताव स्वीकृत किया गया जिसका उद्देश्य भारत में अर्थव्यवस्था के विकास को अधिक गतिशील बनाना था जिससे देश के अन्दर उत्पादन के आधार पर लोगों की आवश्यकताओं को पूरा किया जाए, दूसरे शब्दों में देश को स्वावलंबी बनाने का लक्ष्य होना चाहिए''[10] यह भारी उद्योगों की स्थापना जैसे मशीनों को बनाने वाले उद्योगों और ठीक इसी प्रकार लघु एवं कुटीर उद्योगों के प्रसार की आवश्यकता को उत्पन्न करता है। इस योजना की सफलता न केवल सावधानी पूर्वक और ईमादारी से प्रभावी किए गए आंकलन और उचित मार्गदर्शन पर आधारित है। परन्तु यह लोगों के पूर्ण सहयोग पर भी आधारित है। इसलिए यह योजना व्यापक रूप से लोगों के विचार विमर्श पर आधारित होनी चाहिए।''[11] नेहरू अन्तर्राष्ट्रीयवादी थे उन्हें संकीर्ण राष्ट्रवाद से घृणा थी। उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में भी अन्तर्राष्ट्रीय आर्दशों का सम्मान किया उनका मानना था कि शायद जिस चीन को भली-भांति नहीं समझा जाता वह उद्योगवाद का अन्तर्राष्ट्रीय स्वभाव है। इसने राष्ट्रीय सीमाओं को ध्वस्त कर दिया है और हर राष्ट्र का चाहे वो कितना ही बड़ा क्यों न हो दूसरे देशों पर आश्रित बना दिया है। कोई राष्ट्र वास्तव में स्वाधीन नहीं है, सभी एक दूसरे पर निर्भर है।[12] सार्वजनिक और निजी क्षेत्र की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि- ''सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका, विशेष रूप से, महत्वपूर्ण एवं बुनियादी उद्योगों की स्थापना में खास होनी चाहिए, निजी क्षेत्र को भी अपना कार्य निरन्तर जारी रखना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में उत्पादन और रोजगार में यथेष्ट वृद्धि करने के लिए इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।''

नेहरू बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य के अन्तर्गत भारतीय अर्थव्यवस्था की गतिशीलता और लोचशीलता को सुनिश्चित करने हेतु न केवल

राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय रहे इसी सन्दर्भ में उन्होनें 1955 के वांण्डुग सम्मेलन में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व: विश्वशांति तथा आर्थिक समन्वय को महत्वपूर्ण स्थान देकर इंगित किया।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम की विचारधारा के अन्तर्गत भी नेहरू का अविस्मरणीय योगदान है। उन्होंने कहा कि ''यह एक प्रक्रिया एक पद्धति कार्यक्रम और एक आन्दोलन है जो जीवन के परम्परागत ढंग में परिवर्तन लाने के कारण यह प्रक्रिया है यह एक पद्धति है क्योंकि ग्रामीण लोगों को अपने ही साधनों से और अपनी ही सामर्थ्य से अपनी उन्नति करने में सहायता दी जा सकती है इसके अन्तर्गत कृषि उत्पादन में वृद्धि मौजूदा ग्रामीण शिल्पों तथा उद्योगों में सुधार करने नये उद्योग स्थापित करने, न्यूनतम् शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान करने आवास तथा रहने की स्थिति में सुधार करने और ग्रामीण सभ्यता संस्कृति युवको, महिलाओं के लिए कार्यक्रम बनाने के लिए ग्राम नियोजन में सहायता देना है। इसकी विधिवत शुरूआत 2 अक्टुबर 1952 को की गई योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री वी.टी. कृष्णामचारी ने सामुदायिक विकास कार्यक्रम के पहलू को स्पष्ट करते हुए कहा ''ग्राम वासियों को यह महसूस करना चाहिए कि केवल अपने प्रयत्नों द्वारा ही वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते है। सरकार अनुदानों और ऋणों से कुछ सहायता अवश्य प्रदान कर सकती है। परन्तु मुख्य प्रयास स्वयं उन्हीं का होना चाहिए।[13] हमारा कार्य ग्रामवासियों के ऊपर अपने कार्यक्रमों तथा योजनाओं को थोपना नहीं है। यह कार्य स्वयं ग्रामवासियों का है कि वे हमें बतलाये कि वे क्या चाहते है और फिर हमारा काम उन्हीं की सहायता करना है।'' दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सामुदायिक विकास-योजना में सबसे महत्वपूर्ण तत्व जनता का स्वेच्छापूर्वक सहयोग है लेकिन इस कार्यक्रम की आलोचनात्मक समीक्षा के उपरान्त यह कहा जा सकता है कि नौकरशाही व्यवस्था के ब्रिटिश प्रतिमान और प्रशिक्षित अनुभवी कार्यकर्ताओं की कमी के कारण यह अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सका 2 अक्टूबर, 1955 के एक भाषण में नेहरू ने कहा कि ''हमारे ग्राम्य क्षेत्रों में सामुदायिक परियोजनाओं एवं राष्ट्रीय विस्तार सेवाओं का जिस गति से प्रहार हुआ है, वह आश्चर्यजनक एवं इतिहास में अद्वितीय है। भारत के हृदय में एक महान परिवर्तन हो रहा है मैं इस सबको देखता हूँ और इसको देखते हुए मेरे हृदय में एक गुदगुदी सी होने लगती है।''[14]

उद्योग व कृषि पर नेहरू के विचार

नेहरू नियोजन के द्वारा उद्योग और कृषि को उन्नत करना चाहते थे। वह देश में औद्योगीकरण के पक्षधर थे अत: द्वितीय पंचवर्षीय योजना में उन्होंने देश के औद्योगीकरण पर बल दिया नेहरू ने उद्योगों में एक शक्तिशाली सार्वजनिक क्षेत्र (पब्लिक सेक्टर) की कल्पना की उन्होंने कांग्रेस के करांची प्रस्ताव का उदाहरण दिया, जिसमें महत्वपूर्ण उद्योगों, सेवाओं, खनिज पदार्थो, रेलवे, पानी के जहाजों और यातायात के साधनों पर राज्य के स्वामित्व का उल्लेख किया गया इस प्रस्ताव की व्याख्या '' उन बड़े उद्योगों और उद्यमों के लिए की गई थी, जिनके स्वरूप में एकाधिकार सम्मिलित था। इस तर्क की सभी उद्योगों पर लागू करना ही इस सिद्धान्त का उचित और तर्कसंगत प्रयाास था यह स्पष्ट है कि हमारी योजना को इसी आधार पर आगे बढ़ाना चाहिए और यदि इन उद्यमों पर राज्य का स्वामित्व न हो तो भी राज्य को जनता के हित के लिए इसे नियंत्रित और संचालित करना चाहिए।''

औद्योगीकरण की उन्नति के सन्दर्भ में कुछ मूलभूत आवश्यक बातों पर ध्यान देना अति आवश्यक है जैसे भारी इंजीनियरिंग एवं मशीन निर्माण उद्योग, वैज्ञानिक अनुसंधान की संस्थाएं, परमाणु और सु रक्षा उद्योग तथा विधुत शक्ति अर्थात् ये सभी योजनाओं के आधार में मूल स्थान रखती है। नेहरू ने देश के औद्योगीकरण की महत्ता के सम्बन्ध में जनता के दिमाग पर प्रभाव डाला। उन्होने चेतावनी दी ''यदि किसी देश में औद्योगीकरण को समाप्त कर दिया जाए तो वह या तो आर्थिक अव्यवस्था का शिकार बन जायेगा या फिर दूसरे औद्योगिक देश उस देश का शोषण करेगें।'' जो किसी भी रूप में उस देश की अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक नहीं होगा।

लेकिन भारी औद्योगीकरण पर बल देते हुए भी नेहरू ने देश की अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगों के महत्व की उपेक्षा नहीं की उन्होंने कुटीर उद्योगों के राष्ट्रीय संरक्षण पर बल दिया 1945 कांग्रेस कार्यकारिणी की कलकत्ता बैठक में केन्द्रीय विधान सभा के चुनावी घोषणा पत्र में निर्धनता के अभिशाप को दूर करने हेतु उनके विचारों को रेखांकित किया गया जिसमें उद्योग और कृषि, सामाजिक सेवा एवं सार्वजनिक सुविधाओं को आवश्यक रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, उन्होंने कहा कि ''सरकार को महत्वपूर्ण एवं आधारभूत उद्योगों, सेवाओं, खनिज पदार्थो, रेलवे, पानी के रास्ते, जहाजों और यातायात के साधनों को नियंत्रित करना चाहिए। मुद्रा और विनिमय, बैंक, बीमा को राष्ट्रीय हितों के लिए ही संचालित किया जाना चाहिए।''

निर्धनता की एक मुख्य समस्या ग्रामीण विकास का उचित संतुलन न होना भी बताया और कहा कि कृषि और उद्योगों के निरन्तर विकास हेतु विज्ञान और तकनीकी को विकसित किया जाए इस बात को सुनिश्चित किया जाए कि भूमि सम्बन्धी प्रावधानों का

पुनर्गठन सहयोग के आधार पर होना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से खेती के कार्य एवं किसानों के अधिकार को कायम रखने के लिए, इसे रेखांकित किया गया कि ''प्रगतिशील कृषि एवं नये सामाजिक मूल्यों के निर्माण को सहकारी कृषि की आवश्यकता है, जो भारतीय स्थितियों के अनुकूल है'' परन्तु किसी भी प्रकार का परिवर्तन ... सद्भावना और किसानों से सम्बन्धित समझौते के आधार पर किया जा सकता है। किसान वर्ग को प्रभावित करने के लिए सहकारी खेती के लाभ एवं प्रयोगात्मक सहकारी खेती की स्थापना की जानी चाहिए।'' 1951 में किया गया प्रथम संविधान संशोधन जिसमें भूमिसुधार कानूनों को लागू किया जाना इस बात की ओर स्पष्ट संकेत करता है कि भारत में भू-सुधारों एवं कृषि विकास हेतु सरकारी प्रयास उचित सामाजिक समन्वय के आधार पर किये जाए।[15]

निष्कर्ष

जवाहरलाल नेहरू एक महान् मानवतावादी नेता थे और अपने समय के बुद्धिमान राजनेता थे। ब्रिटिश सरकार द्वारा छोड़ी गई समस्याओं का समयानुकूल भारतीय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में उचित हल ढूंढने का न केवल प्रयास किया बल्कि व्यवहारिक रूप में हल करना प्रारम्भ किया। वे मृत्युपर्यन्त भारत के नवनिर्माण में लगे रहे। पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा देश के आर्थिक व सामाजिक ढांचे में परिवर्तन लाने की कोशिश की सामाजिक दृष्टि से पिछड़े लोगों को : वैधानिक संरक्षण और विशेषाधिकार दिये। कृषि सहित औद्योगिक विकास हेतु कुटीर, मध्यम तथा विशाल उद्योगों की स्थापना का प्रयास किया। साथ ही, नेहरू ने कड़े परिश्रम पर बल दिया और ''आराम हराम है'' का नारा दिया। स्पष्ट है कि तीव्र औद्योगीकरण के माध्यम से आधुनिक भारत की आधारशिला रखना चाहते थे। क्योंकि नेहरू इस बात से भली-भांति परिचित थे कि बिना औद्योगीकरण के भारत का विकास सम्भव नहीं है।

कुछ आलोचक नेहरू पर आक्षेप भी लगाते हैं कि उन्होंने लघु एवं कुटीर उद्योगों की उपेक्षा की। यह सत्य नहीं है कि नेहरू लघु और कुटीर उद्योगों के विकास से बेरोजगारी की समस्या दूर करना चाहते थे और वे कृषि का आधुनिकीकरण भी चाहते थे। वस्तुत: नेहरू एक अर्थशास्त्री नहीं थे फिर भी उनका प्रभाव पंचवर्षीय योजनाओं के प्रारूप निर्मित करने से लेकर उनके प्रभावी क्रियान्वयन तक देखा जा सकता है। इस प्रकार नेहरू के अनुसार अर्थशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना था। नेहरू ने महादेव गोविन्द रानाडे का अनुसरण करते हुए भारत में अर्थशास्त्र में नियमों पर बल दिया तथा यह तथ्य भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में उनकी नीतियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, बी.पी., आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, षष्ठम संशोधित संस्करण, आगरा, 2014, पृ. 596
2. ऑटोबायोग्राफी, पृ. 373
3. एस. गोपाल, सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू (दूसरी श्रृंखला), खण्ड -1, नई दिल्ली, 1984, पृ. 20
4. नेहरू, जवाहरलाल, प्लानिंग एण्ड डवलपमेंट, दिल्ली, 1956, पृ. 5
5. दास, एम.एन., दी पोलिटिकल फिलॉसफी ऑफ जवाहरलाल नेहरू, नई दिल्ली, 1978, पृ. 35
6. ऑटोबायोग्राफी, पृ.362-64
7. नेहरू, जवाहरलाल, सोवियत रशिया, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, 1928, पृ. 62-74
8. इंडियन नेशनल कांग्रेस: रिज्योल्युशंस ऑन इकॉनमिक पॉलिसी, प्रोग्राम एंड एलाइड मैटर्स (1924-1969), पृ. 86
9. द्विवेदी, आर., लाइफ एण्ड स्पीचेज ऑफ पंडित जवाहरलाल नेहरू, पृ. 88
10. वहीं, पृ.103
11. इन्पोर्टेन्ट स्पीच ऑफ जवाहरलाल नेहरू, पृ. 75
12. एस, गोपाल, सलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू, खण्ड 9, नई दिल्ली, 1976, पृ. 367
13. चन्द्र, विपिन, द राइज एंड ग्रोथ आफ इकॉनामिक नेशनलिज्म इन इंडिया, नई दिल्ली 1966, पृ. 758
14. इंडियन नेशनल कांग्रेस: रिजोल्यूशन ऑन इकॉनामिक पॉलिसी, प्रोग्राम एंड एलाइड मैटर्स (1924-1969) नई दिल्ली, 1969, पृ. 14-18.